खलनायक अंकल - सोनिया बजाज

मेरा नाम सोनिया ब्जाज है. एक दम गोरा रंग, छरहरा बदन, तीखे नयन नक्श, गुलाबी होंठ, कसे हुए उभार, बेदाग बदन ये मेरी काया है. मेरी उम्र २० साल है और कालेज के फाईनल ईयर में हूं. मुझे गाड़ी चलाना नही आता, ऐसा नही है कि मुझे मेरे पापा ने सिखाने की कोशिश नही की पर मै सीख ही नही पाई. इस लिए हर एक काम के लिए अगर कहीं भी जाना होता है तो मुझे किसी के साथ ही जाना पड़ता है. ज्यादातर पापा ही जाते है और कभी कभी पापा के कोई फ्रेंड.

हमारे पड़ोस मे एक महीने पहले ही एक फैमली किराये से रहने आई, फैमली मे मिया बीबी बस. हमारे घर आना जाना होने लगा और अंकल का नेचर इतना अच्छा कि मेरे पापा उन्हे अपने भाई से ज्यादा मानने लगे. पर मुझे थोड़ा ठीक नही लगता था कि इतना जल्दी किसी पर इतना भरोसा कर लिया जाए. खैर मुझे कालेज में काम था, असल में बहुत दिनो से कालेज नही जा पाई थी, कुछ नोट्स लेने थे. मेरी फैमिली को शादी का फंक्शन अटेन्ड करने बाहर जाना था, मेरे पापा ने मुझे कहा कि कल चली जाना पर पता नही क्यों मै जिद्द कर रही थी. असल में मेरी एक फ्रेन्ड थी जिससे मिलने का मन था. उसी समय पड़ोस वाले अंकल आ गये और पापा से पुछे कि क्या हुआ. पापा ने बताया कि मुझे कालेज छोड़ने जाना है और उन्हें शादी का फंक्शन अटेन्ड करने बाहर जाना है. अंकल ने पेशकश कि, की वो मुझे कालेज छोड़ देंगे. पापा ने कहा कि सवाल छोड़ने जाने का नही है वापस लाने का भी है. अंकल ने कालेज छुटने का टाईम पुछा, मैने बताया कि १२ से ४ कालेज टाईम है. अंकल ने कहा, "मेरा आफिस का टाईम १० से ४ है, मेरे साथ चलो और मेरे साथ वापस आ जाना." मैने कहा कि दो घंटे पहले जा कर क्या करूंगी. तो अंकल बोले कि दो घण्टे मेरे आफिस मे रूक जाता. तुम्हारे कालेज के बगल मे ही मेरा आफिस है. पापा को बात जंच गई और मेरे ना नुकुर करने के बावजूद मुझे जबर्दस्ती तैयार करवा कर साथ में भेज दिये.

अंकल की उम्र ३५ से ४० के बीच होगी वो ट्रेफिक आफिस में काम करते थे. पापा को भी बहुत काम पड़ता था वहां और अंकल के कारण दिनो का काम मिनटो मे हो जाता था. मैने एक अच्छी सी सलवार सूट पहना और उनके साथ बाईक मे बैठ कर ९:४५ पर कालेज को निकली. १० बजे तक हम उनके आफिस पहुंच गये. वो मुझे लेकर अंदर गये और गलियारे से होते हुए एक रूम मे घुस गये. वहां उनके ही उम्र के दो लोग बैठे थे जिनसे उन्होने मुझे मिलवाया. वहां सिर्फ कालेज जी तरह राड वाली एक टेबल रखी थी और ५ कुर्सी रखा थी जिसपर हम बैठ गये. अंकल ने चपरासी को बुलाया और चाय लाने को कहा. मैने अंकल से कहा कि मै चाय नही पीती तो उन्होने चपरासी से सब के लिए जूस लाने को कहा. चपरासी चला गया और थोड़ी देर में जूस लेकर आ गया. वो एक जग मे जूस और ग्लास लेकर आया था और चपरासी ने सारा सामान टेबल पर रख दिया. सब जग उठा कर अपना अपना ग्लास भरने लगे. जब मेरी बारी आई और मैने जग उठाया तो जग बहुत भारी लगा. ग्लास मे डालते नही बन रहा था तो थोड़ा सा टेबल क्लाथ पर गिर गया. मैने जग वापस रख दिया. अंकल ने ग्लास मेरे हाथ में पकड़ा दिया और

टेबल क्लाथ समेटने लगे. उन्होने चपरासी से चिल्ला कर कहा, "आराम से खड़ा है हरामखोर, ग्लास मेरे तेरा बाप डालेगा." चपरासी हड़बड़ा कर आया और जग उठा कर मेरी तरफ बढ़ा. जितनी हड़बड़ा कर आया था कि कुछ न कुछ गलती का अंदेशा था ही सो गलती हो ही गई. चपरासी ने हड़बड़ी मे सारा जूस मेरे उपर ही गिरा दिया. मै जूस से तरबतर हो गई. अंकल खड़े हुए और चपरासी को खींच कर एक झापड़ मार दिये. चपरासी गाल सहलाता हुआ बाहर निकल गया. मैने अपने कपड़ो कि तरफ देखा तो अंकल ने कहा, "सोनिया यहां अटेच बाथरूम है, तुम वहां नहा लो." मै बिना कुछ बोले बाथरूम मे चली गई.

बाथरूम मे घुस कर मैने दरवाजा बंद कर लिया, पलट कर देखा तो एक और दरवाजा दिखा. शायद बाथरूम दो रूम से अटेच था, पर उसमें अंदर से कुंडी नही थी. मैने ये बात अंकल को बताई तो वो बाहर से बोले कि उस रूम में कोई नही है, वो रूम बंद है. मैने अब अपने उपर गिरे जूस का अंदाजा लिया तो पता चला कि जूस बहुत ज्यादा गिरा है और कपड़े धोना जरूरी है. सो मैने एक एक करके कपड़े उतारना शुरू किया. पर दिक्कत ये थी कि वहां कुछ भी नही था कपड़े लटकाने को. मैने इधर उधर देखा को पाया कि दीवार छत से नही जुड़ी थी और बीच में थोड़ा गैप था सो मैने अपने कपड़े वही लटकाने लगी. मैने समीज उतारा, फिर सलवार, फिर ब्रा और पैन्टी. मेरे आदत है कि मै ब्रा पैन्टी के बिना ही नहाती हूं. जैसे ही मैने सारे कपड़े रखे मुझे लगा कि मेरे कपड़े सरक रहे है. जब तक मै कुछ समझ पाती किसी ने दीवार की दूसरी तरफ से मेरे कपड़े खींच लिए थे. मै कुछ बोलती उससे पहले ही अंकल कि आवाज आई, "सोनिया तुम नहा लो मै तुम्हारे कपड़े धुलवा देता हूं." मैने दरवाजा खोल कर झांका पर वो जा चुके थे. मै जल्दी जल्दी नहा ली पर न तो टावेल था न कुछ और. अच्छा हुआ जो मैने सर नही धोया था.

तभी किसी ने दुसरे दरवाजे पर दस्तक दी. मैने पुछा कि कौन है तो उसने अपना नाम बताया. उसने मुझे बाहर निकलए को कहा क्योकि उसे नहाना था. उसने बताया कि उस पर किसी ने केवाच गिरा दिया था और उसे बहुत खुजली हो रही थी. अब मै निकलती कैसे, एक कपड़ा नही था. क्या करूं सोच ही रही थी कि अंकल ने आवाज देकर पुछा कि कोई समस्या तो नही है. मैने समस्या बताई तो अंकल कुछ देर सोच कर बोले कि बाहर आ जाओ. मैने कहा कि मैने कपड़े नही पहने है तो वो बोले कि वो बाहर जा रहे है और बाहर से दरवाजा बंद कर देंगे. कोई रास्ता नही था क्योंकि वो आदमी बार बार बोल रहा था कि निकलो बाहर वर्ना अंदर घुस जाऊंगा. मैने अंकल को बाहर जाने को कहा और फिर दरवाजे से झांक कर बाहर देखा कि रूम में कोई है तो नही. रूम मे कोई नही था तो मै बाहर आ गई और बाथरूम का दरवाजा बाहर से बंद कर लिया. मै नंगी बाहर खड़ी थी और अंदर से शावर की आवाज आ रही थी. अभी दो मिनट भी नही हुए थे कि वो दो लोग जिनसे मै मिल चुकी थी और दो नये चेहरे धड़धड़ाते हुए कमरे में घुस गये और कुर्सी पर बैठ गये. अचानक उनकी नजर मुझपर पड़ी पर न तो वो लोग उठ कर बाहर गये. न कुछ बोले. मै तो इस परोशोपेश में थी कि अपने नंगे बदन का कौन सा हिस्सा कैसे छुपाऊं. जैसे

तैसे मैने दोनो हाथो से अपने चुत को ढका. तभी चपरासी अन्दर आया जूस लेकर और पांच ग्लास मे जूस धाल कर चला गया. उसने मुझे देखा पर ऐसा लगा कि वो ऐसे सीन रोज ही देखता हो, कोई भाव ही नही थे चेहरे पर.

वे लोग जूस ग्लास मे डाल कर पीने लगे और आपस मे बाते करने लगे. शर्म से मेरा चेहरा लाल पड़ गया था और बदन पर पसीना आ रहा था. अचानक एक ने दूसरे से कहा, "बेचारी अलग से किनारे मे खड़ी है और हम सब जूस पी रहे है. उसे भी बुला लो." उसने मुझसे कहा, "सोनिया तुम भी आकर यही बैठ जाओ, जूस पी लो थोड़ा." मुझे तो कुछ बोलते नही बन रहा था फिर भी मैने धीरे से कहा, "नही मै यहीं ठीक हूं." वो आदमी उठा और मेरी कलाई खींचते हुए कहा, "आप तो फालतू मे तक्कल्लुफ कर रही है." वो मुझे खींच कर कुर्सी तक लाया और मुझे कुर्सी पर बैठा दिया. मैने एक हाथ से अपने चुत को ढक लिया और एक हाथ से अपने स्तनो को ढक लिया. उसने ग्लास मे जूस ढाल कर मेरे सामने रखा. ग्लास किसी भी हाथ से उठाती तो जिस्म की अच्छी खासी नुमाईश हो जाती. उस आदमी ने फिर कहा, "आप तक्कल्लुफ कर रही है." और मेरे हाथ जिस से मैने अपने स्तनो को ढक रखा था, खींच कर उसमे ग्लास पकड़ा दिया. मैने एक झटके से ग्लास खत्म किया और अपने स्तनो को दोबारा ढक लिया. उसने कहा, "अरे सोनिया बेबी पानी नही जूस पी रही हो. एक ग्लास पांच मिनट से पहले खत्म हो जाए तो क्या खाख मजा आयेगा जूस का." उसने एक ग्लास जूस और ढाल दिया. मै तो समझ ही नही पा रही थी कि करूं तो क्या करूं. वो लोग अपने बातो मे मशगूल हो गये. जैसे ही मै ग्लास उठाने के लिए हाथ बढ़ाती चारो मेरे स्तनो को एक टक घूरने लगते और ग्लास रख कर जैसे ही स्तनो को ढक लेती वो लोग अपने बातो मे मशगूल हो जाते. जैसे तैसे मैने ग्लास खत्म किया और अपने बदन को अपने हाथो से छुपाकर बैठी रही.

कुछ लोगो को लग सकता है कि मुझे चिल्लाना चाहिए था, पर इससे मेरे बदन कि नुमाईश और लोगो के सामने होती और एरिया मेरा नही था पर शहर तो मेरा ही था तो कोई न कोई जानने वाला मिल ही जाता. जिन्दगी भर की बदनामी मोल ले लेती.

थोड़े देर वैसे ही बैठी रही तो उसमे से एक न कहा, "आ इतने तक्कल्लुफ से क्यो बठी हुई है. आराम से बैठिए." इतना कह कर उसने मेरे दोनो हाथ खींच कर अगल बगल मे रख दिया. उसके इस कृत्य का विरोध भी नही कर पाई न ही अपने हाथ वापस ला पाई. वैसे ही बैठी रही अपने बदन की नुमाईश करते हुए. वो लोग अपनी बाते करते रहे. एक ने कहा, "क्या मस्त शर्ट है, कहा से ली, आदि आदि." बात करते करते एक ने कहा, "अरे क्या बढ़िया स्तन है तुम्हारे सोनिया, संतरे के समान, मेरी पत्नी के तो तरबूज हो गये है. और दबाने से गीला मैदा लगता है. तुम्हारे तो टाईट है न?" मै क्या बोलती, चुप चाप बैठी रही. उसने आगे कहा, "अरे तुम तो फालतु मे शर्मा रही हो, लाओ मै खुद ही देख लेता हूं." इतना कह कर उसने अपने दोनो हाथो से मेरे स्तनो को पकड़ा और मसलने लगा. शर्म से गड़ी जा रही थी और उसने कहा, "एक नम्बर, बहुत मस्त कसावट है." तभी दूसरे ने कहा, "लाओ मै भी देखूं." और उसने भी मेरे

स्तनो को दोनो हथेलियों से पकड़ कर अच्छे से मसला. एक एक करके चारो ने मेरे स्तनो को मसला और कहा, "सही है, सच में बहुत मस्त कसावट है." तभी किसी ने किसी से कहा, "स्तन की बात तो ठीक है पर चुत का क्या?" एक ने कहा, "मेरी पत्नी कि तो इनती फैल गई है कि अब लौकी घुस जाए. तुम्हारी चुत का क्या हाल है सोनिया. लाओ मै देखूं जरा." उसने मेरी जांघो को फैलाया और मेरी चुत में एक उंगली अंदर तक घुसा दी. मुझे करंट सा लगा और ऐसा लगा कि उछल जाऊं. वो कुछ देर तक मेरे चुत को उंगली से टटोलता रहा और फिर उंगली बाहर निकाल ली. एक एक करके सब ने मेरी चुत मे उंगली डाल कर कुछ देर तक मेरी चुत को टटोला. मेरी चुत पानी छोड़ने लगा था अब तक.

तभी दरवाजा खुला और मेरे अंकल अंदर आ गये. उस टाईम पर एक की उंगली मेरी चुत मे थी और उसने धीरे से उंगली बाहर निकाल ली. अंकल ने कुछ नही कहा जिस से ये बात साफ हो गई कि ये भी बाकियो के साथ मिले हुए है. उन्होने मुझे उठने को कहा और खुद कुर्सी पर बैठ गये. थोड़ी देर बाद किसी ने कहा, "क्या यार खुद बैठ गये हो और उसे खड़ा रख दिये हो." अंकल ने मेरे हाथ पकड़ा और मुझे खीच कर अपने गोद मे बिठा दिया. वो एक हाथ से मेरे कमर को सहारा दिये हुए थे और एक हाथ से कभी मेरे स्तनो को मसलते कभी मेरे जांघो को सहलाते कभी मेरी चुत में उंगली डालते. वो सब अपने बातो में मश्गूल रहे. थोड़ी देर मे किसी ने कहा, "अरे यार, तुम थक गये होगे, लाओ इसे मै अपनी गोद में बिठा लेता हूं." मुझे खींच कर वो अपनी गोद में बिठा लिया और मेरे बदन से खेलने लगा. हर पांच मिनट में मै एक से दूसरे की गोद में जाती रही. आखिर मे अंकल की गोद मे दोबारा पहुंच गई. अंकल ने कहा, "सोनिया, तुम बहुत भारी हो, एक काम करो तुम टेबल पर लेट जाओ." मेरी कहा चल रही थी, सब ने मुझे टेबल पर लिटा दिया. एक व्यंजन की तरह मै सब के सामने परोसी हुई थी. एक ने मेरे दिल की बात सुन ली और अंकल से कहा, "व्यंजन की तरह लग रही है. जी कर रहा है कि सब मिल कर चख ले." अंकल ने कहा, "तो मै मना कर रहा हूं क्या, चख लो." सब को शायद इसी का इंतजार था. वो लोग टूट पड़े. कोई मेरे स्तनो को मसल रहा था, कोई निप्प्ल चूस रहा था, कोई मेरे जांघो से खेल रहा था, हर कोई मेरी अंग अंग को चूम रहे थे. एक एक करके सब मेरे होंठो को चुम चूस रहे थे. सब ने मुझे चखा और अलग हट गये. मैने अंकल की तरफ देखा जो अपने कपड़े उतार रहे थे. एक ने पुछा, "क्या कर रहे हो?" अंकल ने कहा, "चख कर भूख बढ़ गई है. अब तो पेट भरना पड़ेगा.

अंकल अपने कपड़े उतार कर टेबल कर आ गये और मेरी जांघो को फैला कर अपना लण्ड मेरी चुत पर सटा दिये और दबाव देकर उसे अंदर ढकेलने लगे. क्योकि चुत से पानी आ रहा था इसलिए लण्ड आसानी से अंदर चला गया. अंकल ने मुझे बांहो मे समेटा और मेरे गालो और गले को हलके से चुमते हुए बोले, "सोनिया रानी, हम तो तुम्हे अन्छुई कली समझ रहे थे, पर तुम तो पहले भी लण्ड खा चुकी हो." मैने कुछ नही कहा, बात सच थी, इस से पहले भी तीन लोग मेरे जवानी का मजा चख चुके थे. मेरी चुत का सील मेरे कालेज के छात्र संघ के अध्यक्ष जो अंतिम वर्ष मे था ने तोड़ी थी. हालाकि वो पूरी

तरह से ब्लातकार नही था पर पूरी तरह से मेरी मर्जी भी नही थी. उसने मुझे मेरे बायफ्रेंड के साथ कम्यस्ट्री लैब में पकड़ लिया था. वो डरपोक तो भाग गया पर छात्र संघ के अध्यक्ष ने मुझे ब्लैकमेल करके मेरे चूत की सील तोड़ दी. उसके बाद दो महीने तक उसने मेरे जिस्म का खूब मजा लिया और तीन बार उसने मुझे अपने दो दोस्तो को भी परोस दिया. खैर वो अलग कहानी है. अभी मुद्दा कुछ और है. अंकल धीरे धीरे धक्के लगाने लगे. वो बीच बीच मे रूक कर मेरे स्तनो को मसल देते, या मेरे निप्पल चुस लेते या मेरे होंठो को चुसते. थोड़ा उम्र का तकाजा, ५ मिनट में ही मेरी चुत मे पानी छोड़ कर खड़े हो गये. उनके खड़े होते ही दूसरा कपड़े उतार कर मेरे उपर आ गया और मेरी चुत मे अपना लण्ड डाल कर धक्के लगाने लगा. उम्र मे ये भी अंकल के बराबर ही था इसलिए इस ने भी ५ मिनट में ही मेरी चुत मे पानी छोड़ दिया और खड़े हो गया. इसके बाद तिसरा मेरे उपर आकर मेरे चुत में अपना लण्ड घुसा दिया और धक्के लगाने लगा. इसकी ताकत भी अच्छी थी और लण्ड मे दम भी काफी था. हर एक धक्के पर लगता था कि वो मेरे चुत के सबसे निचली सतह को छु गया. उसे चुत मे पानी छोड़ने मे काफी टाईम लग रहा था और चौथा बेसब्र हो रहा था. उसने अपना लण्ड मेरे हाथ मे पकड़ा दिया और मुझे हस्थमैथुन करने को कहने लगा. मैने उसके लण्ड को अपने हथेली से मसलने और सहलाने लगी. जो आदमी मेरी चुत मे अपने लण्ड से धक्के लगा रहा था, उसने मेरी चुत मे पानी छोड़ दिया और साथ ही चौथे ने भी पानी छोड़ दिया. पांचवा मेरे उपर चढ़ कर मेरे चुत में अपना लण्ड घुसा दिया और धक्के लगाने लगा. ५ मिनट में ही मेरी चुत मे पानी छोड़ कर वो भी खड़े हो गये.

सब अपना अपना अंडरवीयर पहनने लगे तभी चपरासी दौड़ते हुए अंदर आया और अंकल के कान में कुछ बोला. सब सकते में आ गये, अंकल मेरे पास आये और हड़बड़ाते हुए मुझे उठाए और मुझे बाथरूम के पास ले गये. मुझसे बोले, "सोनिया, जल्दी से बाथरूम मे छुप जाओ, बड़े साहब आ रहे है, इस हालत मे देख लेंगे तो पुलिस बुला लेंगे." मुझे भी थोड़ा डर लगा. उन्होने बाथरूम का दरवाजा खटखटाया, दरवाजा खुला और दो लड़के बाहर झांके. अंकल ने जल्दी से कहा, "इसे अंदर ले लो." दोनो ने मुझे उपर से नीचे तक देखा और बोले, "अंदर ले तो ले, पर कुछ नही करेंगे इसकी गारंटी नही ले सकते." अंकल झल्ला कर बोले, "जो करना है करो, बस इसको अंदर ले लो." दोनो ने एक एक हाथ से मेरे स्तनो को पकड़ा और मुझे अंदर खींचने लगे. मेरे अंदर पहुंचते ही दोनो ने दरवाजा बंद कर लिया. दोनो नंगे थे, उनमे से एक ने मुझे दीवार पर सटाया और मेरी जांघे फैला कर मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया. वो धीरे धीरे धक्के लगाने लगा, दूसरा मेरे स्तनो से खेल रहा था. धीरे धीरे उसके धक्के तेज होते गये और १५ मिनट बाद वो मेरी चुत में पानी छोड़ने लगा. उसके अलग होते ही दूसरे ने मेरी चुत में अपना लण्ड डाल दिया. उसे भी चुत मे पानी छोड़ने मे १५ मिनट लगा. दोनो ने मुझे नहलाया और मेरी चुत में उंगली डाल कर साफ किये. दोनो ने अपने अपने कपड़े पहने और जाने लगे. उनमे से एक ने कहा, "रानी तुम्हे नहलाना जरूरी था, उन्हे चुदी चुत और रौन्दी हुई फूल पसंद नही." मैने पुछा किसे तो उसने मुझे दरवाजे मे कान लगा कर सुनने को कहा.

मैने दरवाजे से कान लगा दिया. उधर बाते चल रही थी. एक भारी आवाज ने कहा, "मेरे लिए माल का इन्तेजाम किया." एक आवाज आई, "जनाब माल बाथरूम मे नहा धो कर तैयार है." उसी भारी आवाज ने कहा, "मुझे कालेज की माल पसंद है." एक और आवाज आई, "कालेज की माल ही है." उसी भारी आवाज ने फिर कहा, "अगर मेरे स्पेशल फरमाईश पर ना नुकर करेगी तो." अंकल की आवाज आई, "पुलिस बुला कर साली को उसके हवाले कर देंगे और वेश्या वृती का केस लगवा देगे. २०-२२ पुलिस वाले जब रात भर लाकअप मनमानी करेंगे तो पता चलेगा साली को." मेरी तो हड्डियो तक सिहरन हो गई. उसी भारी आवाज ने कहा, "दरवाजा, खुलवाओ." दो पल बाद अंकल दरवाजा खटखटा रहे थे. मै सोच रही थी क्या करूं तभी पीछे वाला दरवाजा खुला और जिसने मुझे नहलाया था वो अंदर आ गया. उसने बाथरूम का दरवाजा खोला और वापस उसी दरवाजे से बाहर चला गया. आवाज से पता चल गया कि बाहर से दरवाजा लगा गया. अंकल ने इधर का दरवाजा खोला और मुझसे कहा, "साहब आ रहे है अंदर, ठीक से खुश करना, वरना....." आगे अधूरा छोड़ कर वो बाहर निकल गये. अगले ही पल एक कसरती बदन का जवान मर्द नंगे बदन अंदर घुसा, उसका लण्ड काफी मोटा और लम्बा था. अंदर आ कर उसने दरवाजा बंद कर दिया.

उसने एक क्रीम की ट्यूब उठाई और अपने लण्ड पर लगाने लगा. जब लगा चुका तो उसने मुझे पीछे घुम जाने को कहा. न कहने की तो हिम्मत ही नही थी सो पीछे घुम गई. उसने मुझे झुकने को कहा. मै झुक गई. अचानक मुझे महसूह हुआ की वो मेरी गांड़ के छेद पर अपना लण्ड सटा रहा है. इस तरह से पहले कभी नही की थी पर विरोध करने की हिम्मत नही थी. उसने अपने पेट और छाती का भार मेरी पीठ पर डाल दिया और मेरे बाह के निचे से हाथ ला कर मेरे स्तनो को थाम लिया. अचानक उसने एक तेज झटका दिया और पुरा लण्ड मेरी गाड़ फाड़ते हुए अंदर घुस गया. न चाहते हुए भी एक तेज चीख मेरे मुंह से निकल गई. मैने कस कर अपनी हथेली से मुह बंद कर लिया ताकि बाहर कोई आवाज न सुन ले. वो मेरे स्तनो को मसलता रहा और मेरे गले के पास चुमता रहा. जब मै थोड़ा शांत हुई तो उसने धीरे धीरे धक्के लगाना शुरू कर दिया. ५ मिनट लगा अभ्यस्त होने मे और फिर उसके धक्को की गति बढ़ती गई. १० मिनट तक लगातार धक्के लगाता रहा पर लण्ड ज्यो का त्यो. अचानक उसने लण्ड बाहर खीच लिया. मैने पलट कर देखा तो उसने मुझे फर्श पर लेटने को कहा. मै लेट गई. वो मेरी जांघे फैला कर मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया और धक्के लगाने लगा. बीच बीच मे रूकता और मेरे स्तनो के निचले हिस्से पर काट लेता, मेरे निप्पल को काट लेता या मेरे होठो पर दांत गड़ा देता. उसके बाद फिर धक्के लगाने लगता. १५ मिनट बाद उसने मेरू चुत मे पानी छोड़ दिया और दरवाजा खोल कर बाहर निकल गया.

बाहर निकल कर उसने कहा, "मजा आ गया, चलो अब मै चलता हुं. साली छिनाल के पिछवाड़े की सील टूटी है अभी. देख लेना." इसके बाद आवाजे आना बंद हो गई. ३ मिनट के बाद चपरासी मेरे कपड़ो के साथ आया और कपड़ो को साईड मे रख कर उसने मुझे उलटा किया. मेरे गाड़ के छेद कर उसने बर्फ का एक टुकड़ा रखा और सिकाई करने लगा. मैने उससे पुछा, "जूस गलती से गिरा था या जान बूझ कर."

उसने कहा, "जान बूझ कर." मैने पुछा, "चक्कर क्या था." उसने बताया कि मेरे अंकल और बाकी लोग अक्सर कालेज की लड़किया जो आस पास रहती है उनको लेकर आते है. किसी न किसी तरीके से कपड़े उतवा कर ऐसे हालात बनाते है कि वो मजबूरी मे सब के साथ ये सब बिना विरोध करे. फिर अपने तीन साहब को वो लड़की परोस देते है. मैने पुछा कि क्या एक लड़की एक बार से ज्यादा भी आती है. उसने कहा कि ऐसा कभी कभी ही होता है. अक्सर नई लड़कियां ही आती है, कोई बहुत जबर्दस्त माल हो तो तीन चार बार आ जाती है. पर दूसरी बार बहाना नही करना पड़ता. सीधे चुदाई होती है. मैने कहा कि दूसरे बार कौन आने को तैयार होगा. उसने बताया कि बाथरूम मे गुप्त कैमरा लगा है और कही रिकार्डिंग चल रही है. इस बात से मुझे खुद पसीना आ गया. चपरासी ने कहा, "आपका बदन देख कर लगाता है कि आपका २-३ चक्कर और लगेगा." मैने पुछा, "जब कोई लड़की नही मिलती तब." उसने कहा, "ऐसा होता तो नही है पर ऐसा होने पर ये अपनी पत्नियो को ले आते है." मैने पुछा कि कोई कॉन्डम तो इसतेमाल नही कर रहा था, किसी को गर्भ ठहर गया तो. उसने बताया कि जूस मे गर्भ न ठहरने की दवा मिली है. सिकाई करके उसने मुझे उलटा किया और मेरे जांघे फैला कर मेरी चुत मे अपना लण्ड घुसा दिया. वो धक्के लगाने लगा और ५ मिनट मे मेरी चुत गीली करके उठ गया. उसने मुझे नहलाया और कपड़े पहनाए.

मै बाहर निकली तो अंकल बैठे थे. मै उसने साथ बाहर आई और वो मुझे बाईक से घर पहुंचा दिये. जब मै घर के अंदर जाने लगी तो वो बोले, "सोनिया, किसी से कुछ मत कहना, और अगली बार बुलाऊं तो चुप चाप घर मे बहाना बना कर आ जाना, नही तो विडियो गलत हाथ मे भी जा सकता है." मैने सर हिलाया तो वो बोले, "मै तुम्हे दो तीन बार और ले जाऊंगा, उससे ज्यादा परेशान नही करूंगा, उसके बाद मेरा मन भर जायेगा. तुम चलना और कपड़े उतार कर मेरे रूम मे बैठ जाना, जितने लोग आऐंगे उनकी प्यास बुझा देना बस." मैने सर हिलाया तो वो बाईक आगे बढ़ा दिये.

आगे क्या हुआ फिर कभी.

सोनिया बजाज